

DPN 6707

अनन्त व्रत विधि / ANANTA VRATA VIDHI

Title :

Run. No. 7433

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Karmakāṇḍa*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. / New. / New. / Nep. /

Size in cms. 22.5 x 5.5

Folios 3

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : *wooden cover*

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

The available folios are 1-3.

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

अनन्त व्रतमाश्नुते ॥ ... ॥ वाक्य ॥ : यजमानां मनन्त व्रतानिमित्यर्थः कर्तुं
श्रीसूययि अघ्नमः ॥ Fol. 36 : इति अनन्तादिचतुर्दश वेद ॥



ॐ नमो अनकाय ॥ अनकवगमारु ॥ स्नानादिनिश्चयकर्मकृत्यो ॥ कणावगममावरु आयडमाननामिचका ॥
 यगनगवक ॥ स्नाननकुचक ॥ धूनिचूपय्याय ॥ यगअरुगनवालावदा रुलस्नाननरुलअगनग ॥ स्ना
 नकलेखकनकीग ॥ ॐ अयादि ॥ उहिसूर्यासहर्मा ॥ भागडावागिडिगत्यग ॥ अनकमाहिमीरुक्तागृहाव
 यदिवकन ॥ वाय ॥ यडमानानामनकवगनिमित्त्यर्थकर्तुं दीसूर्याय अर्घ्यनमः ॥ ॐ मोहान्धकालनि
 ॥ पृथ्वीनमः ॥ ॥ पूजार्हं तिलाहागनधियकीग ॥ ॐ नमो अनकाय ॥ ॐ नमो स्नानकायनि ॥ ॐ सिद्धिस्तु ॥

वाक्त्रावाक्त्रावर्त्तानकविया ॥ वाक्त्रावनत्रैगेनमस्कारं न्यासार्ययागुयूडाआमपूडा ॥ ननाद्वार्त्त
 चने ॥ उं नत्वायामि ॥ उं दवस्यस्वा ॥ उं त्वमग्रयुहि ॥ उं आपाज्जमान ॥ उं यस्याकूमो ॥ उं यदश्कच
 ॥ उं यद्मानन ॥ उं यानापृथिवी ॥ उं यगयन्ता ॥ उं जामिन्द्रीन ॥ उं द्वात्रादवी ॥ उं चत्वालिशृङ्गा ॥
 उं यश्चर ॥ उं ॐ दं विष्णु ॥ उं जग्निर्गु ॥ उं ॐ वत्सर्त्त ॥ उं अग्रज्या ॥ उं शत्रादवी ॥ उं उय
 द्वा ॥ उं नदीश्वर ॥ उं गन्धर्वा ॥ उं वृहस्पति ॥ उं यावकाना ॥ उं धीश्वर ॥ उं अस्माकमिन्दु ॥ उं

नमावद्गुप्तया ॥ उं सफयश्चक्रि ॥ उं जसोऽस्मा ॥ ॐ निसमङ्गलदानाञ्चने ॥ ॥ ननाजनकादिव
 उर्द्धशर्वद ॥ उं अनकायनमशा ॥ उं जगन्मनूषसि विष्णुवत्तासामस्यननूषसि विष्णुवत्तामिथ्राना
 श्वमसि विष्णुवत्तासामनायत्तासामरुगविष्णुवत्ताग्रयत्तात्रायस्याषदविष्णुवत्ता ॥ १ ॥ उं कपिलाय
 ॥ उं नीलयीवागिगिकक्षदिव ॥ उं दाउयचिना ॥ नसा ॥ उं रुमुया ॥ उं नवधन्वानिगन्नासि ॥ २ ॥ उं सख
 यश ॥ उं उदृत्यजागर्वद ॥ उं दर्वव रुनिकगवाह ॥ उं विश्वायसूर्य ॥ ३ ॥ उं सैकषनाय ॥ उं विज

नृवृहत्पिदुसायमभयुद्धधयः कृपावविदुर्न॥ वागयूनायाञ्जुहिवकनितनायुजायपाषयूत्रभवि
 नोजनि॥ ४॥ उँ हलायूजायश॥ उँ उत्रविष्णुविक्रमस्वाप्रक्षुयायनस्त्रुविशद्युर्गयनयानचिवयय
 यरूपतिनित्रस्वाहा॥ ५॥ उँ मलिरूषधायश॥ उँ दिवावाविष्णुडनवापृथिव्यामहावाविष्णुडनान
 कविका॥ उँ राहिरुसावसूनायुषः ४॥ स्वययः कृदक्षिणदातमयाधिविष्णुवत्वा॥ ६॥ उँ शीलैयान
 यश॥ उँ गीषियदाविवेकमे॥ ७॥ उँ वलरुजायश॥ उँ शुभर्का॥ ८॥ उँ शून्धनायश॥ उँ सुदेवार्नि

रुद्रादित्यरुद्रायसुद्रवन्द्यमासुद्रवशुर्कवृक्षर्गायशसपडापनित्वाहा॥ ९॥ उँ लाकाल्नाकया
 श॥ उँ आरुषु॥ १०॥ उँ रुर्लिंदायश॥ उँ विष्णुकर्मोविपश्चिनियतावनानियस्यणी॥ ११॥ उँ सुययुक्
 मखाविष्णुयुः ४॥ पत्रमपद॥ १२॥ उँ सहसुरुनिवश॥ उँ सहसुगीषी॥ १३॥ उँ कषुयश॥ उँ कषुस्य
 खयश॥ मयत्वाइस्रम्याकामिवदिसिवहिषत्वाइस्रम्याकामिवहित्रसिमुक्त्वाइस्रम्याका
 मि॥ १४॥ उँ यागनिदायश॥ उँ ना० सुविदुर्वयस्यविनामार्हवत्वासुमर्गाविष्णुजयो॥ कामस्यक

(ॐ) उ दू ह व ॐ य पी ना ॐ सह स्रक्ष नाय य सा म ह्रीं ग म ॥ १४ ॥ ॐ ति अ न ना दि च गु र्दे श व द ॥ ॥ ५ ॥
 प्राय श ॥ उं य द्वा न न ॥ उं शं वा य श ॥ उं प वि ष ष ॥ उं च का य श ॥ उं सृ प शु या ॥ उं न य आ शी र्वा ह न ॥ उ वि दा न
 व ह स्य न वा च स्य न ये क्क ल ॥ उ न ॥ उ न नि द ॥ य वा न न गु न न स्य न न दी प न य द्वा वा पृ थि वी य ॥ कू म ॥
 ग दाय श ॥ उं अ सि य मा अ स्या दि त्या अ र्च न मि ह न ॥ गू र्ग न व र न ॥ अ सि मा भ न स म या दि पृ क्क आ दू र्ग
 मि नि दि वि व न्न नानि ॥ वि य श ॥ उं धी श्र न ॥ उं स न स र ॥ उं पा व का न ॥ उं ग नू ज य श ॥ उं सृ प धू र्ग सि



